शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह, जुलाई २०२३

नवम वर्ष अंक - 02

"वसुधैव कुटुम्बकम"

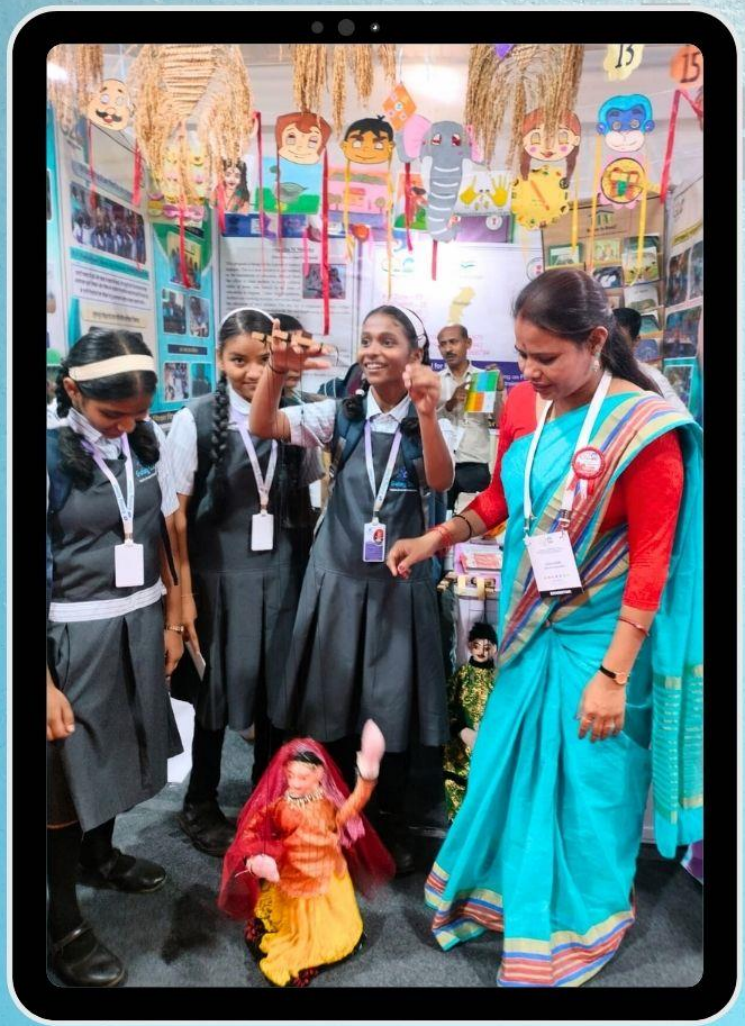

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: संकुल स्तर पर परिणाम आधारित प्रशिक्षण

राज्य में विगत वर्ष सभी संकुलों से दो-दो मेंटर की पहचान कर उनमें से एक को भाषा एवं एक को गणित के लक्ष्यों को सभी शालाओं में प्राप्त करने की जवाबदेही देते हुए प्रशिक्षित किया गया है। इस सत्र में इन चयनित मेंटर्स को अपने अपने संकुलों में संचालित सभी प्राथमिक शालाओं में निम्नलिखित बदलाव अनिवार्य रूप से लाते हुए अपने विकासखंड को इस बाबत् पूर्णता प्रमाण पत्र देना होगा-

i. प्राथमिक शालाओं की प्रत्येक कक्षा में उस कक्षा से संबंधित लर्निंग आउटकम का प्रदर्शन स्पष्ट रूप से होना चाहिए और शिक्षकों को लर्निंग आउटकम और विद्यार्थियों द्वारा उसकी संप्राप्ति के संबंध में अद्यतन स्थिति से अवगत रहना आवश्यक है। इस हेतु विद्यार्थी विकास सूचकांकों को नियमित रूप से अपडेट रखना होगा।

ii. प्रत्येक प्राथमिक शाला में एक खिलौना कार्नर बनाकर उनमें पढने वाले बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेल-खिलौने एवं ऐसे खिलौनों को जिससे सीखने में आसानी हो, को बनाकर नियमित उपयोग में लाए जाने की व्यवस्था की जाए। स्कूलों को अब तक वितरित खिलौनों के साथ-साथ अधिक से अधिक खिलौनों को शिक्षकों द्वारा बच्चों एवं समुदाय के सहयोग से बनाकर इस कार्नर में नियमित उपयोग हेतु रखा जाए। बच्चों को खिलौनों के साथ खेलने एवं आपस में वार्तालाप के समुचित अवसर देवें ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

iii. प्रत्येक शाला में अब तक ऍफ़ एल एन के अंतर्गत दिए गए सभी किट का नियमित उपयोग करते हुए बच्चों को सीखने में सहयोग देने हेतु सभी आवश्यक व्यवस्था एवं उपयोग के तरीकों पर जानकारी साझा किए जाने की व्यवस्था करें ताकि उन सभी सामग्री का प्रभावी उपयोग किया जा सके। उदाहरण के लिए पॉकेट बोर्ड एवं फ्लेश कार्ड से कैसे विभिन्न लर्निंग आउटकम को बच्चों को सिखाया जाए, भाषा गणित किट, खिलौना किट में उपलब्ध सामग्री का उपयोग कैसे किया जाए

iv. शाला को अब तक उपलब्ध सभी पुस्तकों की स्टोक बुक में प्रविष्टि एवं उनके स्तर के अनुरूप पुस्तकों का वर्गीकरण कर उपयोग में लाएं। सभी बच्चों में पठन कौशल के विकास के साथ साथ तेज गति से समझ के साथ पढ़ सकने के कौशल के विकास पर पूरे सत्र फोकस करना होगा। छोटे बच्चों को आपके पुस्तकालय में मिली 180 कहानी की पुस्तकों को पढने का अवसर देवें, बच्चों के पठन कौशलों का परीक्षण करते रहें।

v. प्रत्येक कक्षा में बच्चों को विभिन्न गतिविधियों के आयोजन/समझ विकसित करने जोड़ी अथवा छोटे छोटे समूह में कार्य एवं अभ्यास करवाया जाना सुनिश्चित करें

राज्य के सभी संकुल समन्वयकों एवं शाला संकुल के उच्च कक्षाओं के शिक्षकों की जिम्मेदारी होगी कि शुरुआती दस दिनों के भीतर सभी प्राथमिक शालाओं में उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर मेंटर्स के माध्यम से इस सत्र से नियमित कार्य शुरू हो जाए। FLN के अंतर्गत आयोजित क्षमता विकास कार्यक्रम में ये परिणाम सभी प्राथमिक शालाओं में दिखाना अनिवार्य होगा। इस हेतु संकुल स्तर पर बैठक लेकर आवश्यक कार्यवाहियां सुनिश्चित करें।

एजेंडा दो: जलन/ईर्ष्या करो और बेहतर परिणाम दो

आमतौर पर हम यह उपदेश देते हैं कि हमें कभी भी एक दूसरे से जलन या ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाए जाने हेतु अब शिक्षकों को अपने आप में इस गुण को धारण कर ही लेना चाहिए (😊)। लेकिन यहाँ एक बात ध्यान में रखना होगा। आपको अपने आसपास के स्कूलों के बच्चों को भी आगे बढाने हेतु शिक्षकों को प्रेरित करना होगा और अपने बच्चों के साथ उनके बच्चों की तुलना में और अधिक मेहनत कर कुशल रणनीति के साथ सीखने एवं ऊपर बढ़ने में सहयोग देना होगा। अर्थात सामने वाले की लंबाई को कम कर अपने आपको बड़ा साबित करने के बदले सामने वाले के लंबाई से अधिक स्वयं को बढ़ाने की प्रवृत्ति अपने भीतर लानी होगी। पर ऐसा करते समय बच्चों के स्तर, उनका बचपन, उनके सीखने की क्षमता आदि को भी ध्यान में रखना होगा।

आपने वह कहानी तो सुनी ही होगी जिसमें किसी को यह वर मिलता है कि वह जो मांगेगा वह मिलेगा लेकिन शर्त यह होती है कि उसका दुगुना उसके पड़ोसी को मिलेगा। उसने एक घर माँगा। पड़ोसी को दो घर मिल गए। उसके एक कार माँगा। पड़ोसी को दो कार मिल गए। इसे देखकर उस आदमी को जलन होने लगी। उसने अपनी एक आँख फोड़ने का वर माँगा। उसके पड़ोसी के दोनों आँख फूट गए। ऐसा करके उसने अपने सुखी जीवन को नष्ट कर दिया। ऐसा जलन या ईर्ष्या की भावना अपने भीतर बिलकुल भी न रखें। आप तो अपने आसपास के स्कूल के बच्चों को बेहतर प्रदर्शन करते हुए देखकर खुश होकर अपने बच्चों को उनसे और बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार करें। मुकाबला करना हो तो अपने बराबर का व्यक्ति होना चाहिए। ये क्या बात हुई कि आप किसी मुकाबले में एक भैंस और बकरी को भिडा रहे हो।

अपने आसपास के स्कूलों को देखें, परिसर के भीतर एवं बाहर का भ्रमण करें। यह सोचें कि इससे बेहतर और मैं क्या कर सकता हूँ। इसके लिए आपको सीखने के लिए सजावट, बाला कोंसेप्ट एवं इंटरनेट पर अनेक सामग्री मिल जाएगी। इनसे आइडिया लेकर अपनी शाला परिसर को और बेहतर एवं आकर्षक बनाने का प्रयास करें।

आपके आसपास की शालाओं के बच्चे बहुत तेज गति से समझ के साथ पढने लगे हैं, वे मौखिक गणित भी बहुत जल्दी कर लेते हैं, ऐसे में आप क्या कुछ अपने शाला में करें कि आपके बच्चे उनके बच्चों की तुलना में और अधिक गति एवं समझ के साथ पढ़ना कर सकें। आप क्या कुछ करें कि आपके बच्चे भी गणित में बहुत होशियार हो जाए। जलन करो तो ऐसे करो !

देखें कि आसपास के गणित-विज्ञान-युवा-इको क्लब किस प्रकार से काम कर रहे हैं और इनके माध्यम से कौन-कौन से कार्य प्रभावी रूप से स्कूलों में आयोजित किए जा सकते हैं।

जब तक हमारा समुदाय एक दूसरे से अपने बच्चों के सीखने को लेकर जलना/ईर्ष्या शुरू नहीं करेगा तब तक बच्चों के सीखने के स्तर या गति में तेजी नहीं आ सकेगी। तो फिर इस सत्र में उसकी साडी मेरी साडी से सफ़ेद या उसकी गाडी मेरी गाडी से तेज क्यों? सोचकर अपनी साडी और गाडी में निरंतर सुधार लाना शुरू करें।

एजेंडा तीन: कक्षा शिक्षण में कार्यपत्रक (वर्कशीट) का महत्व

सामान्य रूप से एक कार्यपत्रक एक छपा हुआ कागज होता है जिसमें प्रश्नों / समस्याओं/ अभ्यासों का संग्रह होता है जिनका उपयोग शिक्षण क्षेत्र में व्यापक रूप से किया जाता है। एक सार्थक कार्यपत्रक ऐसा साधन है जो बच्चों को अर्थपूर्ण सीखने में संलग्न करता है, जैसे किसी अवधारणा को समझना, उसका प्रयोग सीखना या उच्च-स्तरीय सोच विकास के ओर बढ़ पाना। कक्षा में कार्यपत्रक के उपयोग के लिए बहुआयामी उद्देश्य होते हैं। निश्चित रूप से ये सीखने वाले के लिए अलग और सिखाने वाले के लिए अलग तरह की भूमिका में होते हैं।

सीखने वाले के लिए –

i. ***नई अवधारणा को सीखने के लिए :-*** कार्यपत्रक को शिक्षक बच्चे को एक नई अवधारणा से परिचय कराने के लिए उपयोग करते हैं। जैसे भाषा में – चित्रों को देखकर उनके बारे में बोलना और लिखना – इस प्रक्रिया में जिन बच्चों को लिखने में दिक्कत होती हैं उन्हें नए तरीके से लिखने का मौका मिलता है। चित्र में थोड़े बहुत बदलाव करते हुए शिक्षक बच्चों के लिए एक ही कार्यपत्रक को अलग-अलग नजरिए से विचार करने के लिए प्रेरित करते हुए लिखवा सकते हैं।

ii. ***अभ्यास के लिए :-*** सीखी हुई अवधारणा की समझ को बहुआयामी बनाने के लिए अलग-अलग तरह के अभ्यासों के कार्यपत्रक निर्मित किये जाते हैं। जैसे- एक कहानी की चार तस्वीरों पर तीन से चार बार कहानी या वर्णन लिखवाने पर हर बार बच्चे का लेखन एक जैसा नही होता। एक ही चित्र या प्रश्न पर बच्चों के विभिन्न प्रकार के जवाब उनके लेखन के अभ्यास को पुख्ता करते हैं। कार्यपत्रक में शिक्षक को ऐसे प्रश्न शामिल करने चाहिए जो सिर्फ़ हल्के स्तर के सोच-विचार तक ही सीमित न हों, जैसे कि याद करना, नक़ल करना और प्रक्रियाओं को दोहराना। अभ्यास कार्यों में बच्चों की वैचारिक समझ का उपयोग होना चाहिए।

iii. ***आकलन के लिए :-*** बच्चों को कार्यपत्रक यह समझने में मदद करती है कि वे क्या सीख पाए और क्या शेष हैं। यह एक स्व-आकलन का भी प्रभावी साधन है।

सिखाने वाले के लिए –

i. ***सीखने का अवसर –*** कार्यपत्रक कक्षा में उपलब्ध और संसाधनों के अलावा अवधारणा को नए तरीके से सीखने का अवसर उपलब्ध कराती है। जिसमें हर बच्चे का उनका अपना प्रदर्शन होता है।

ii. ***सीखे हुए का प्रमाण –*** कार्यपत्रक बच्चे के द्वारा प्रदर्शित कार्य का ठोस प्रमाण होती है व यह दर्शाती है कि एक बच्चे ने एक निर्दिष्ट समय सीमा में कितनी अच्छी तरह सीखा है। इसलिए ये एक बच्चे द्वारा की गई प्रगति का विश्वसनीय साक्ष्य हो सकती है। शिक्षक बच्चों की कार्यपत्रक से प्रासंगिक पेज निकालकर उनके पोर्टफ़ोलियो में रिकार्ड के रूप में सम्मिलित कर सकते है। इस तरह के पोर्टफ़ोलियो प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं के एक व्यापक और समेकित दृश्य प्रदान करते हैं। इनका उपयोग बच्चों के सीखने के स्तर के सम्बन्ध में पालकों के साथ समय-समय पर संवाद करने में किया जा सकता है।

iii. ***सीखने के स्तर का निर्धारण और शिक्षण योजना बनाना:*** कार्यपत्रक का उपयोग बच्चों के सीखने के वर्तमान स्तरों को जानने के एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 20 बच्चों के एक समूह को कार्यपत्रक देकर, कोई शिक्षक इस बात को बिल्कुल स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम हो सकते है कि उनकी कक्षा में कितने बच्चें किसी विशेष दक्षता में कौनसी स्तर पर हैं। वह उस दक्षता का भी अन्दाज़ा लगा सकते है जिसमें उनकी कक्षा सबसे कम समझ है, जिसमें अधिकांश बच्चों ने ग़लतियाँ की हैं।

iv. ***'सीखने के लिए आकलन' की संस्कृति*** - कार्यपत्रक बच्चों का आकलन एवं प्रगति का सतत अवलोकन, बच्चों का शिक्षण के माध्यम से बेहतर समझ, गतिविधियों की योजना और कौशलों को बढ़ाने में मदद कर सकती है। इसके माध्यम से शिक्षक बच्चों को सही दिशा प्रदान कर सकते हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने, लिखने एवं समझने का अवसर प्रदान कर सकते हैं। एक ऐसा कार्यपत्रक जिसमें ख़ुद से सोच-विचार करने की जगह और अवसर हों, वह बच्चों को 'सीखने के लिए आकलन' की तरफ़ ले जाने में मदद करेगा। बच्चें स्व-आकलन का अभ्यास करने और अपने मज़बूत पक्षों व कमज़ोरियों पर सोचने-विचारने में सक्षम होंगे। छोटी कक्षाओं में, शिक्षक को इस प्रक्रिया में बारीक़ी से सहयोग करने या सरल उदाहरणों का उपयोग करने की आवश्यकता होगी।

इसलिए एक शिक्षक के लिए कार्यपत्रकों की रचना के सिद्धान्तों और प्रक्रियाओ की समझ विकसित करना महत्त्वपूर्ण है। जैसे कुछ सिद्धान्त और प्रक्रिया निम्न है –

i. **सीखने के प्रतिफलों के साथ सामंजस्य:** कार्यपत्रक किसी विषय से सम्बन्धित सीखने के प्रतिफलों और दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। सीखने में हुई नुकसान को ध्यान में रखते हुये बच्चों की वर्तमान कक्षा से कम-से-कम दो निचली कक्षाओं के सीखने के ज़रूरी प्रतिफलों को ध्यान में रखना चाहिए। इसका उदाहरण - कक्षा-3 के बच्चों के लिए कार्यपत्रक बनाते समय, कक्षा-2 और 1 के भी कुछ प्रश्न और अभ्यास कार्य इसमें शामिल करना चाहिए।

ii. **उच्च-स्तरीय सोच विकास:** किसी अवधारणा के विकास व उससे संबन्धित अभ्यासकार्य के बाद में ऐसे प्रश्न शामिल किए जा सकते हैं जो बच्चे को पर्याप्त चुनौती भी देते हों। कार्यपत्रक ऐसी होनी चाहिए जो बच्चे को अनुप्रयोग, विश्लेषण और प्रश्नों को हल करने के कौशलों का प्रदर्शन करने में धीरे-धीरे मदद करें।

iii. **पारस्परिक सहयोग:** कुछ अभ्यास-कार्य समूहों या जोड़ियों में किए जा सकते हैं जहाँ बच्चों को प्रश्न का हल करने के लिए अपने साथियों के साथ परस्पर सहयोग करने का अवसर मिलता हो। उदाहरण के लिए, किसी प्रश्न में, बच्चों को कुछ संकेतक प्रश्नों के साथ स्थानीय मान की समझ पर काम करना है और अपने सवालों के हल को कार्यपत्रक में दर्ज करना है। इस तरह के अभ्यास-कार्य कक्षा में चर्चा शुरू करने और इन्हें विषय की आगे की अवधारणाओं से जोड़ने के लिए एक अच्छी शुरुआत प्रदान कर सकते हैं।

iv. **विद्यार्थी के सोच-विचार व्यक्त करने की स्थान और शिक्षक के फ़ीडबैक**: कार्यपत्रक में विद्यार्थी के लिए अभ्यास कार्यों/ प्रश्नों पर सोच-विचार करने और अपने विचार साझा करने के लिए स्थान होना चाहिए। इसके साथ ही, शिक्षक को भी विशेष अभ्यास कार्यों पर विद्यार्थियों को फ़ीडबैक देना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में मदद मिलेगी कि आगे आने वाले अभ्यास कार्यों में उनसे क्या अपेक्षित है।

इस सत्र के प्रारंभ से ही अपने पाठ्यपुस्तक को पढ़ाते समय उन लर्निंग आउटकम को खोजें जो उस पाठ को तैयार करते समय ध्यान में रखा गया है। इन लर्निंग आउटकम की संप्राप्ति के लिए वर्कशीट तैयार करवाएं। आप चाहें तो अपने संकुल में अलग अलग विषयों एवं पाठों के लिए शिक्षकों को वर्कशीट तैयार करने की जिम्मेदारी देते हुए प्रतिमाह उनसे अगले माह के लिए पूर्व तैयारी कर साझा करने हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

एजेंडा चार: स्कूल में उपलब्ध भाषा और गणित के विभिन्न कार्यपत्रक (वर्कशीट) का उपयोग कैसे करें?

हमारे पास उपलब्ध कार्यपत्रक के सभी प्रश्नों को देखना और समझना, कि इसमें किस प्रकार के सवाल दिये हुए हैं यह पहलू अहम है ताकि हम कार्यपत्रक का पूरा और सही इस्तेमाल कर सकें। यह सवाल हमारी कक्षा में मौजूद अलग-अलग सीखने के स्तर के बच्चों के अनुसार हम किस प्रकार से उपयोग कर सकते हैं। ध्यान रहे, की पूरी कार्यपुस्तिका कक्षा में सारे बच्चों के लिए उपयोगी न हो, इसलिए ज़रूरी है कि हम प्रश्नों को पहले अपने तरफ से देख लें। समझने की कोशिश करें कि बच्चों के सीखने में मदद कौन-से सवाल, कार्यपत्रक के कौन-से पन्ने से लेकर कौन-से पन्ने तक बच्चों के किस समूह में हमारी कक्षागत प्रक्रिया में हमारा सहयोग कर रहे होंगे। तो अब बात आती है कि यह कैसे जाने की कौन से सवाल बच्चों के किस समूह के लिए मददगार होंगे? इसके लिए हम कुछ जवाब ढूँढने की तरफ बढ़ सकते हैं। इसमें सवाल किस अकादमिक सत्र या पाठ पढ़ाने के कौन-से समय पर ज़्यादा उपयोगी रहेगा? यह एक पहलू महत्वपूर्ण हो जाता है। जैसे की कौन-से सवालों के साथ हम कक्षा को शुरू करेंगे? कौन-से पूर्व अवधारणा पर जोर देना है? तथा वह कौन-से सवालों के साथ यह कार्य किया जा सकता है?

गणित की कक्षा शिक्षण में कार्यपत्रक (वर्कशीट) की उपयोगिता

i. कक्षा – स्तर के बच्चों के साथ कार्यपत्रक के आखिरी पन्नों के साथ भी कार्य शुरू किया जा सकता है क्योंकि उनके लिए शुरू के सवाल काफी आसान लगेंगे और यह बच्चे शायद खुद से भी इन सवालों को हल करने की कोशिश कर रहे होंगेऔर बच्चों का वह समूह जो कक्षा स्तर से पीछे हैं या शुरुवाती स्तर यानि मूलभूत संख्यात्मकता के स्तर पर है, उन बच्चों के लिए कार्यपत्रक के पहले पन्ने से ही प्रयास करना होगा उन बच्चों के साथ ज्यादा ध्यान और मार्गदर्शन की जरूरत होगी।

ii. ऐसी स्थिति भी हम कक्षा में कर सकते हैं कि, जहां पर हम बच्चों को जोड़ी में काम दे सकते हैं। जहां जोड़ी ऐसी हो जिसमें एक बच्चा जिसने यह सवाल बना लिया है और समझ बन चुकी है, उसके साथ एक ऐसा बच्चा जिसको अभी भी उस अवधारणा की समझ पर काम करने की जरूरत है। इसमें हमारे निर्देशों के बाद बच्चे खुद आपस में सीख रहे होंगे, दुविधा को एक-दूसरे के सहारे सुलझा रहे होंगे और जब वहाँ पर भी कोई बात नहीं समझ आ रही या कोई समाधान तक नहीं पहुँच पा रहे तो फ़िर आपके (शिक्षक/शिक्षिका) पास आ सकते हैं।

iii. अगर जरूरत लगे तो कार्यपत्रक के अलावा भी खुद से कुछ प्रश्नों को बनाने के लिए कोशिश कर सकते हैं ताकि कक्षाओं में बच्चों के सीखने में हमारी मदद कर रहा होगा।

iv. कार्यपत्रक से काम यहाँ पर असल में शुरू होता है – कि यह समझ पाना की बच्चों या बच्चों के समूह ने जो गणित के सवाल हल किए हैं तो उसमें क्या-क्या गलतियाँ हैं और कहाँ-कहाँ पर यह हमने पाया है। कौन-से उप-अवधारणा बच्चे सही हल कर पाये हैं और कौन-से नहीं। जैसे की एक बच्चे ने बिना हासिल और हासिल वाले जोड़ के सवाल सही हल किए हैं पर घटाने वाले सवाल मे गलती कर रहे है। पर ग़ौर से देख कर हमको यह समझ में आ सकता है कि बच्चा बड़ी संख्या मे से छोटी संख्या तो घटा लेता है पर छोटी संख्या मे से बड़ी संख्या नहीं घटा पाता। 135 - 95 वाले प्रश्न मे देखिये। वह 5 में से 5 घटाने पर 0 लिख पाता है और फिर पुनः 13 में से 9 घटा कर 4 लिख देता है। आगे के प्रश्न मे भी यही पैटर्न देखने को मिलता है, इसका

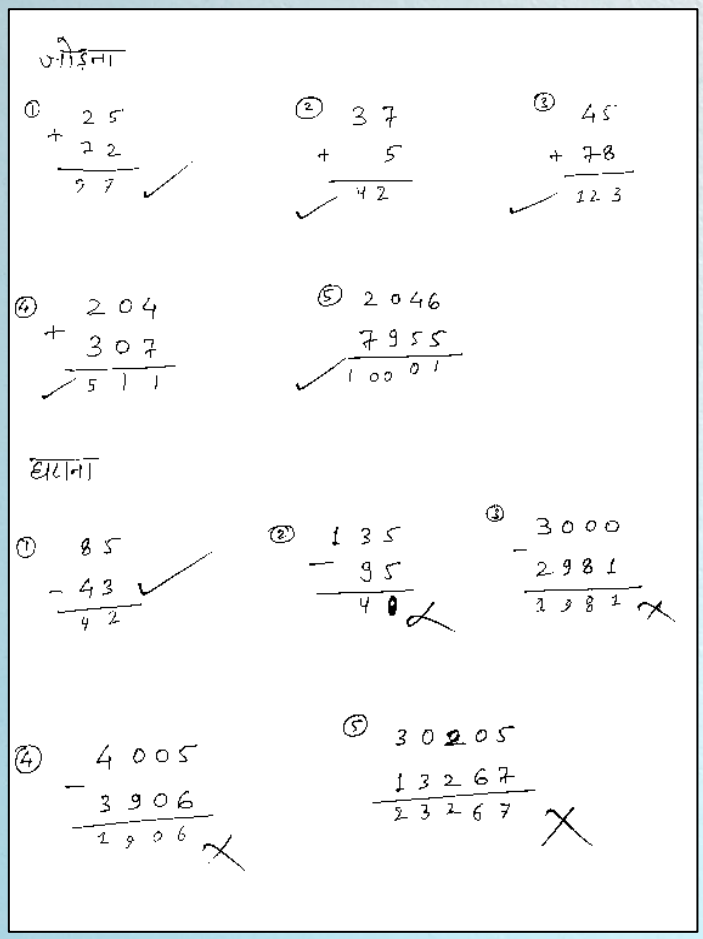

मतलब इस बच्चे मे यह समझ है कि हमेशा बड़ी संख्या में से ही छोटी को घटाया जाता है और जब उसे बड़ी संख्या नही मिलती तो वह आप-पास के अंक जो उसे बड़ी संख्या के रूप मे दिखते है उसे बड़ी संख्या मानकर उससे छोटी संख्या को घटा देता है।

v. तो यहाँ पर इन बच्चों के साथ स्थानीय मान के आधार पर हासिल कैसे लेते है? इस अवधारणा पर आगे काम कर रहे होंगे न की हम सिर्फ यह देखें कि वो कुछ सवाल हासिल के नहीं कर पाया।

भाषा की कक्षा में पढ़ना-लिखना सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कार्यपत्रक (वर्कशीट) की उपयोगिता

भाषा शिक्षण में कार्यपत्रक की मदद से बच्चों को बुनियादी पठन और लेखन, शब्दावली, वाक्य संरचना निर्माण को समझने और उनके अभ्यास के लिए दिया जाता है। यह उन्हें किसी भी अवधारणा और विचारों को स्पष्ट और संगठित रूप से व्यक्त करना सिखाता है। बच्चों को विभिन्न शैक्षणिक या विषय-निश्चित कार्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य पत्रक दिए जाते है। कार्यपत्रकों का उपयोग शिक्षक या मार्गदर्शक द्वारा अपेक्षित विषयवस्तु को सिखाने के लिए किया जाता हैं ताकि बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने, लिखने, पढ़ने और अभ्यास करने का मौका मिले। अलग-अलग बच्चों की अधिगम आवश्यकता (Learning needs) अलग-अलग हो सकती है और उन्हें उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अभ्यास दिए जाने चाहिए। जैसे वे बच्चे जो अभी बुनियादी स्तर पर संघर्ष कर रहे हैं उनके अभ्यास वर्ण लेखन , मात्रा लगाना , वर्णों को मिलाकर शब्द बनाना जैसे अभ्यास हो सकते हैं। ऐसे अभ्यासों के नमूने इस प्रकार है-

बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए ऐसे अभ्यास की ज़रूरत होगी जिसमें बच्चों को वर्ण लिखने का, वर्ण में मात्रा लगाने, वर्णों को शब्द बनाने वाले अभ्यास हो सकते हैं। उदाहरण के लिए – चित्र देखकर पहली आवाज़ लिखो, पहले वर्ण में मात्रा लगाकर नए शब्द बनाओ, पहले वर्ण के बदले 'ब' लिखकर नया शब्द बनाओ, ग्रिड में छुपे हुए जानवरों/रंगों के नाम खोजो और लिखो आदि। जो बच्चे बुनियादी कौशल तो सीख गए हैं, किन्तु जिन्हें रचनात्मक लेखन के लिए अभी बहुत सहयोग की आवश्यकता है उन्हें निर्देशित लेखन वाले अभ्यास मिलनी चाहिए। इस प्रकार के अभ्यास में किसी चित्र या संकेत (clue) के माध्यम से किसी निष्कर्ष पर पहुँचकर लिखना होता है. इसमें बच्चों को अपनी कल्पना और अनुभव जोड़ने की पूरी आज़ादी नहीं होती है बल्कि उस चित्र या Clue तक सीमित होता है। इससे बच्चों को अपने तर्क विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों को लिखने का मौका मिलता है और उनका आत्म विश्वास बढ़ता है। उदाहरण के लिए इस अभ्यास को देखिए-

प्रश्न- नीचे 9 कप का एक चित्र दिया गया है । इसकी प्रत्येक लाईन बाएँ से दायें और ऊपर से नीचे के तीन कप मे एक तरह की समानता है । उसे खोजकर लिखे।

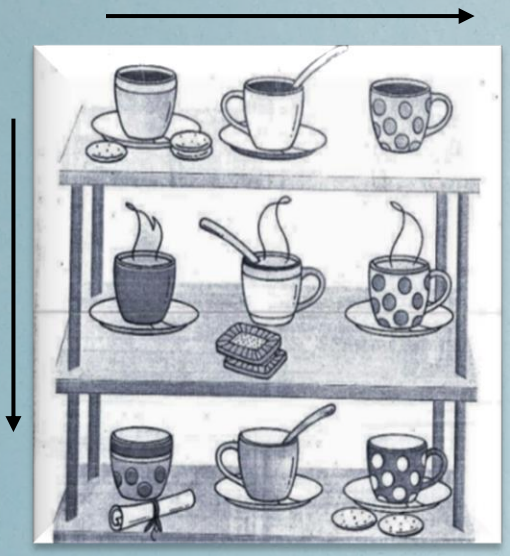

बाएँ से दायें	ऊपर से नीचे

इसी प्रकार जो बच्चे लिखने में सहज हो चुके हैं उन्हें रचनात्मक लेखन के विविध अभ्यास दिए जा सकते हैं। शिक्षक साथी के लिए यह महत्वपूर्ण होता है कि वे बच्चों के लेखन को पढ़ें और समीक्षा करें। उन्हें सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा उन्हें पुनः कार्य /संशोधन करने के लिए मौके व सुझाव दें। कार्यपत्रकों को आकर्षक बनाने के लिए वर्णनात्मक और गतिशील गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है। यह बच्चों की भाषायी कौशल में विस्तृत अनुभव प्रदान करने में मदद कर सकता है, जिससे पढ़ना-लिखना सिखाने की प्रक्रिया में रुचि और स्थायित्व बढ़ता है। शिक्षक इसका उपयोग आकलन(प्रगति जांच) करने, बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान करने, सीखे हुए कौशलों का अभ्यास कराने, भाषा कौशलों के साथ, नवीन अवधारणा विकसित करने के लिए कर सकते हैं।

हम यह उम्मीद करते हैं कि अगले सत्र से आप सभी की कक्षाओं में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कार्यपत्रक (worksheet) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, संकुल, विकासखंड एवं जिले स्तर पर एक स्थाई टीम बनाकर उन्हें कक्षा एवं विषय की जिम्मेदारी देते हुए उन्हें दिए गए विषयों में कार्यपत्रक बनाकर अपने जिले के सभी शिक्षकों तक पहुँचाने एवं उनके बच्चों के साथ नियमित उपयोग की स्थिति की समीक्षा भी करने हेतु एक सिस्टम विकसित कर कार्यपत्रक का लाभ सभी कक्षाओं में दिलवाया जाना सुनिश्चित करें।

एजेंडा पांच: शिक्षक जिन्होंने स्वयं में बदलाव लाया

श्री निरंजन पटेल पढाई के बाद अदालत में काम करते करते अचानक स्कूल में शिक्षक बन गए। उनका चयन रायगढ़ के भीतरी इलाके लाखीमार में हुआ। जैसा कि आमतौर पर भीतरी इलाकों में प्रथा प्रचलित है, निरंजन को भी यह कहा गया कि पन्द्रह बीद दिनों में एक बार आकर हस्ताक्षर कर लेवें। ज्यादा मेहनत की आवश्यकता नहीं है। बच्चे पिछड़े हुए हैं और समुदाय को बच्चों की पढाई से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए अपने अन्य आवश्यक कार्य करते रहें और बीच बीच में आकर हस्ताक्षर कर देवें। बस्तर हो या सरगुजा, भीतरी इलाकों में अमूमन यही प्रथा है जिसे तोड़ पाना मुश्किल है। (शाला संकुल प्रणाली एवं शाला प्रबन्धन समिति के माध्यम से इस प्रथा पर कैसे रोक लगाई जाए, इस पर विचार करें)

सब कुछ सामान्य चलता रहा। इस बीच डॉ एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत सामाजिक अंकेक्षण का आयोजन हुआ जिसमें संकुल के लाखीमर स्कूल को ही कमजोर ग्रेड मिला। यहीं से निरंजन के भीतर के शिक्षक के आत्मसम्मान को चोट पहुंची। उसके अन्दर कहीं छिपकर राज कर रही कर्तव्यपरायणता खुलकर सामने आ गयी।उस दिन से एक नए निरंजन ने उसके भीतर जन्म लिया और उसने अपने स्कूल की तस्वीर को बदलने का प्रण लिया। उसने मन में ठान लिया कि अब जो भी जो वह लाखीमार के स्कूल को राज्य के नक़्शे में एक विशिष्ट पहचान दिलाकर ही रहेगा।

उसने बच्चों के साथ खूब मेहनत करना प्रारंभ किया और उन्हें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी तैयार करना शुरू किया। उसके अधिकांश बच्चे नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में चयनित होते हैं, उसने शाला परिसर को भी आकर्षक बनाने में कोई कसर नहीं छोडी। छत्तीसगढ़ के प्रमुख सभी पर्यटक स्थलों का मिनिएचर उसने बनाया। इन सबमें बहुत राशि का व्यय हुआ। इस हेतु उसने अपने वेतन से प्रतिमाह पचास प्रतिशत राशि स्कूल के विकास के लिए बुक किया। जब उससे पूछा गया कि क्या ऐसा करने पर उसे घर पर पत्नी से फटकार नहीं पड़ती। तब निरंजन ने हंसकर स्वाभाविक उत्तर दिया कि उसकी पत्नी को उसे कितना वेतन मिलता है इसकी जानकारी नहीं है और इसलिए स्कूल पर खर्च करने पर भी उसे डांट नहीं पड़ती।

आज इस स्कूल की यह स्थिति है कि गाँव या आसपास कोई बारात या मेहमान आते हैं तो गांववाले सबसे पहले उन्हें अपने स्कूल के दर्शन करने लाते हैं। स्कूल में उसने विभिन्न पक्षी एवं जानवर भी पाल रखे हैं, उनका मानना है कि उस समुदाय के बच्चे पहले चिड़िए का शिकार बहुत अधिक करते थे। लेकिन स्कूल में कबूतर पालने एवं उसकी देखरेख करते करते उन्हें पक्षियों से प्यार हो गया अब उनके समुदाय से कोई भी व्यक्ति पक्षियों का शिकार नहीं करता।

आपके संकुल में भी शिक्षकों के पास ऐसे अनुभव होंगे जिसके माध्यम से किसी ने अपनी जिन्दगी ही बदल दी हो। आपस में चर्चा कर संकुल में ऐसे शिक्षकों की कहानियाँ एकत्र करें और हमें भी लिखकर भेजें ताकि हम उनसे चर्चा कर उनकी कहानियों को चर्चा पत्र में शामिल कर सकें।

एजेंडा छह: G-20 सम्मलेन से

पुणे में दिनांक 16 से 22 जून, 2023 तक G-20 सम्मलेन का आयोजन किया गया, इस सम्मेलन का मुख्य थीम ऍफ़ एल एन था ताकि राज्य ऍफ़ एल एन के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में तेजी ला सके और गंभीर हो सके। इस सम्मेलन में छत्तीसगढ़ से दस शिक्षकों ने सहभागिता ली। विभिन्न राज्यों के स्टालों से ये चीजें देखने को मिली जिसे हम अपने राज्य में भी कर सकते हैं-

- छत्तीसगढ़ के स्टाल में सभी सामग्री शिक्षकों के हाथों बनाई गयी थी जिसे आगंतुकों ने काफी पसंद किया क्योंकि बहुत से स्टाल में रेडीमेड सामग्री एवं खरीदी गयी सामग्री रखी गयी थी
- धान की बाली से बने झूमर को स्टाल में सजावट के रूप में प्रदर्शित किया गया था जिसके बारे में बहुत से आगंतुकों ने पता कर पक्षियों को दाना चुगने हेतु इसके उपयोग के बारे में जानने पर छत्तीसगढ़ के निवासियों का पर्यावरण के प्रति प्रेम को देखकर नतमस्तक हो गए।
- नागालैंड में बच्चों के लिए आदिवासियों द्वारा बांस से बनाए विभिन्न खिलौनों को प्रदर्शित किया गया था एवं इस पर आधारित सन्दर्भ पुस्तिका भी प्रदर्शित की गयी थी।
- उत्तरप्रदेश में कक्षाओं की दीवारों पर प्रदर्शित करने हेतु कागज़ में मुद्रित कर भेजी गयी सामग्री को प्रदर्शित किया गया था, वहां स्कूलों की दीवारों में प्रिंट-रिच पेंट के बदले कागज़ में मुद्रित कर सीखने की सामग्री को साझा किया जाता है।
- गुजरात में विभिन्न थीम को लेकर छोटी छोटी पठन सामग्री तैयार की गयी है जिसे लंबी अवधि तक पुस्तकालयों में संभाल कर रखा जा सकता है।
- अधिकांश राज्यों ने बिग बुक को लेकर बेहतर कार्य किया है। बिग बुक में द्विभाषी सामग्री पर विचार किया जा सकता है। शिक्षकों को हस्तलिखित बिग बुक बनाने की दिशा में भी प्रयास करना चाहिए।
- बच्चों के पठन कौशल से संबंधित विभिन्न पहलुओं को लेकर आकलन करवाया जाना चाहिए। इसके लिए कुछ विशेषज्ञ संस्थाओं का सहयोग लिया जाना चाहिए।
- स्थानीय भाषा में सामग्री बनाने हेतु स्कूलों/ संकुलों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए

एजेंडा सात: स्कूल खुलते ही कुछ मुख्य तैयारी

स्कूलों के खुलते ही हमें कुछ आवश्यक तैयारी कर लेनी चाहिए, जिनमे से कुछ प्रमुख हैं-

- शाला प्रबन्धन समिति की बैठक का आयोजन कर सभी का प्रवेश एवं नियमित उपस्थिति हेतु आह्वान करते हुए बेहतर शिक्षा हेतु स्थानीय स्तर पर रणनीतियों का निर्धारण
- शाला संकुल स्तर पर चयनित मेंटर्स के माध्यम से FLN के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्ययोजना
- सभी शालाओं में युवा एवं इको क्लब का गठन कर विभिन्न कार्यक्रम एवं ग्रीन स्कूल की स्थापना
- सभी शालाओं में गणित एव विज्ञान क्लब का गठन कर गणित-विज्ञान में समझ के साथ सीखना
- बच्चों को एक दूसरे से सीखने हेतु पियर लर्निंग प्रणाली को सभी कक्षाओं में लागू करना
- पुस्तकालय को व्यवस्थित कर बच्चों के लिए नियमित कालखंड एवं पढने में रुचि विकसित करना
- स्कूलों को अब तक शिक्षकों के लिए उपलब्ध करवाई गयी पुस्तकों एवं पठन सामग्री को एकत्र कर एक बार सभी पुस्तकों को पढते हुए उन पर चर्चा के अवसर निकाला जाना चाहिए। इसे सभी संकुलों में अनिवार्य करते हुए उपलब्ध पुस्तकों से परिचय एवं उनके आधार पर स्कूलों में गतिविधियाँ आयोजित करना आवश्यक है तभी इन सामग्री का बेहतर उपयोग हो सकेगा।

एजेंडा आठ: स्कूलों को सुघ्घर पढ़वैय्या स्कूल बनाना

सुघ्घर पढ़वैय्या योजना के अंतर्गत पोर्टल में सभी शालाओं को अपना पंजीयन करवाना अत्यंत आवश्यक है। अभी भी बहुत सी शालाओं ने अपना पंजीयन नहीं करवाया है। आगामी पन्द्रह दिनों में सभी शाला संकुल यह तय करेंगे कि उनके शाला संकुल के सभी स्कूलों ने इस पोर्टल में अपना पंजीयन कर लिया है।

स्कूलों को इस योजना के अंतर्गत बच्चों को क्या क्या आ जाना चाहिए, इसका अध्ययन कर सभी बच्चों में उनकी प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए, जिन दक्षताओं को सिखाने में दिक्कतें हों तो cgschool.in में उपलब्ध सामग्री का अध्ययन कर क्षमता विकास करें, आप चाहें तो उन क्षेत्रों में अपने क्षमता विकास की मांग भी पोर्टल में कर सकते हैं।

स्कूल में बच्चों की नियमित उपस्थिति को प्रोस्ताहित करेंगे। शत-प्रतिशत उपस्थिति रखेंगे।

जब स्कूल पर्याप्त तैयारी कर लें और अपना स्व-आकलन कर संतुष्ट हो जाएं तो अपने पड़ोस के स्कूल से अपना पियर आकलन कर अपने बच्चों की उपलब्धि की पुष्टि कर लेवें

जब सभी तरह से संतुष्टि हो जाए तो पोर्टल में अपने स्कूल की ओर से सभी स्टाफ से सहमति लेकर चुनौती देंगे, चुनौती के आधार पर आपकी शाला में निरीक्षण दल आकर बच्चों की उपलब्धि का परीक्षण करेंगे, प्राप्त परिणाम के आधार पर प्लेटिनम, गोल्ड, सिल्वर सर्टिफिकेट की घोषणा की जा सकेगी।

एजेंडा नौ: सभी स्कूलों में NAS के लिए प्रारंभ से तैयारी

राज्य में बच्चों की उपलब्धि संतोषप्रद नहीं है और NAS एवं ASER के परिणामों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, सभी संकुल अपने अपने संकुलों में अपने स्तर पर NAS एवं ASER में पूछे जाने वाल प्रश्नों का अध्ययन कर बच्चों के लिए पर्याप्त अभ्यास करवाएंगे, आप सभी का सक्रिय सहयोग एवं योजनाबद्ध कार्य इस हेतु आवश्यक है। निजी शालाओं को भी शामिल करें।

एजेंडा दस: स्कूलों में इस अंक का फोलो-अप

नए सत्र में जून माह एवं जुलाई माह के इस दूसरे अंक को सभी शिक्षकों से पढवाते हुए अपनी अपनी शालाओं में विभिन्न फोलो-अप गतिविधियों का आयोजन करवाएं। पिछले अंक का फोलो- अप उसमें शामिल किया गया है। इस अंक के आधार पर शालाओं में निम्नलिखित कार्यों को संपन्न करवाए जाने की अपेक्षा है-

1. संकुल स्तर पर मेंटर के माध्यम से शिक्षकों को FLN पर प्रशिक्षण की तैयारी एवं निर्धारित बिन्दुओं को सभी शालाओं में लागू करवाना
2. बच्चों के लिए वर्कशीट तैयार कर उन पर नियमित रूप से पर्याप्त अभ्यास करवाना
3. स्कूल खुलते ही आपको कुछ आवश्यक कार्य करने है उसे संपन्न करवाएं
4. सभी स्कूलों को सुघ्घर पढ़वैय्या योजना के अनुरूप तैयार कर लेवें

सभी शाला संकुल अपने संकुल की सभी शालाओं में उपरोक्त कार्यों को संपन्न करते हुए इस संबंध में एक सर्टिफिकेट साझा करेंगे।